**Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences** ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 7.384
Volume - 8, Issue - 3, March - 2025

DOIs:10.2018/SS/202503001 --:-- Research Paper / Article / Review

# भविष्यवादी शिक्षा का अर्थ , आयाम एवं वर्तमान शिक्षा परिदृश्य में भविष्यवादी शिक्षा की प्रासंगिकता

**[1] श्री नारायण सिंह, [2] डॉ, विशाल गुप्ता**

[1] शोध छात्र ( शिक्षाशास्त्र ), एकलव्य विश्वविद्यालय स्कूल ऑफ एजुकेशन एंड लाइब्रेरी साइंस, दमोह, मध्य प्रदेश, 470661

[2] पूर्व शोध छात्र ( शिक्षाशास्त्र बी.एच.यू ) एवं अतिथि प्रवक्ता ,शिक्षाशास्त्र विभाग, एम. एल. के. पी0 जी0 कॉलेज बलरामपुर, उत्तर प्रदेश, 271201

**E-mail –** [1] mlkshrinarayan@gmail.com [2] vishalguptaeco@gmail.com

**सारांश :** आधुनिक कार्यबल की तेजी से विकसित होने वाली मांगें यह सुनिश्चित करने के महत्व को रेखांकित करती हैं कि स्नातक स्तर की शिक्षा उभरती प्रवृत्तियों और उद्योग की आवश्यकताओं के लिए प्रासंगिक और उत्तरदायी बनी रहे। वर्तमान पाठ्यक्रम की प्रासंगिकता और शिक्षा में प्रौद्योगिकी के एकीकरण की जांच करके, अध्ययन मौजूदा शैक्षणिक दृष्टिकोण की प्रभावकारिता का आकलन करने और छात्रों को एक गतिशील पेशेवर परिदृश्य में सफल होने के लिए आवश्यक कौशल और दक्षताओं से बेहतर ढंग से लैस करने के लिए क्षेत्रों की पहचान करने का प्रयास करना इस शोध पत्र का मूल उद्देश्य है।

अगले दस सालों में शिक्षा किस तरह विकसित होगी? कौन सी तकनीकी प्रगति और सामाजिक परिवर्तन हमारी शिक्षा और शिक्षण विधियों को आकार देंगे? जैसे-जैसे हम एक नए दशक में प्रवेश कर रहे हैं, शिक्षा के भविष्य (भविष्यवादी)को परिभाषित करने वाले उभरते रुझानों और भविष्यवाणियों की खोज करना महत्वपूर्ण है। इस शोध पत्र में हम आने वाले वर्षों में शिक्षा को प्रभावित करने वाले प्रमुख रुझानों, संभावित चुनौतियों, अवसरों और बहसों पर विचार करेंगे।

**महत्वपूर्ण शब्द** : भविष्यवादी शिक्षा, पाठ्यक्रम, कौशल, शैक्षणिक, प्रौद्योगिकी, शिक्षाशास्त्र ।

## 1. प्रस्तावना :

**भविष्यवादी शिक्षा** -- भविष्यवादी शिक्षा का मतलब है, बेहतर कल के लिए शिक्षा का तरीका बदलना. इसमें छात्रों को अपनी शिक्षा का ज़िम्मा लेने के लिए सशक्त बनाया जाता है. भविष्यवादी शिक्षा में प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल किया जाता है. शिक्षण में भविष्यवादी का मतलब है, किसी विषय के बारे में छात्रों की सोच को उजागर करना और उनसे आगे क्या होने का अनुमान लगाने के लिए कहना. यह एक महत्वपूर्ण पठन रणनीति है. इससे छात्रों को पाठ को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलती है |

❖ **शिक्षण में भविष्यवादी होने के फ़ायदे :-**

- छात्रों को अगली गतिविधि में स्वामित्व का एहसास होता है.

- छात्रों को पाठ को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलती है.
- छात्रों को पढ़ते समय सक्रिय रूप से आगे सोचने के लिए प्रेरित किया जाता है.
- छात्रों को अवलोकन करते समय पूछे जा रहे प्रश्न का स्वामित्व मिलता है.

❖ **शिक्षण में भविष्यवादी रणनीति अपनाने का तरीका :-**

- छात्रों की सोच को उजागर करना.
- छात्रों से आगे क्या होने का अनुमान लगाने के लिए कहना
- पाठ से विवरण और सुराग का उपयोग करके छात्रों को कहानी में आगे क्या होता है, इसका अनुमान लगाने के लिए प्रोत्साहित करना.
- भविष्यवाणी एक सतत प्रक्रिया है.

पूर्वानुमान लगाना एक महत्वपूर्ण पठन रणनीति है जो छात्रों को कहानी में आगे क्या होता है, इसका अनुमान लगाने के लिए पाठ से विवरण और सुराग का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करती है। यह उन्हें पाठ को बेहतर ढंग से समझने में मदद करने के लिए पढ़ते समय सक्रिय रूप से आगे सोचने के लिए प्रेरित करता है।

**डिजिटल और हाइब्रिड लर्निंग**

क्या पारंपरिक कक्षाएँ अप्रचलित हो जाएँगी? कोविड-19 महामारी ने डिजिटल और हाइब्रिड लर्निंग मॉडल को अपनाने में तेज़ी ला दी है, दुनिया भर के स्कूल और विश्वविद्यालय शिक्षा में निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म अपना रहे हैं। यह प्रवृत्ति जारी रहने की उम्मीद है, जिससे लचीलापन और व्यक्तिगत सीखने के अनुभव मिलेंगे।

**कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन लर्निंग**

AI शिक्षा को कैसे बदलेगा? आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और मशीन लर्निंग शिक्षा पद्धतियों में क्रांति लाने के लिए तैयार हैं। बुद्धिमान शिक्षण प्रणालियों से लेकर स्वचालित ग्रेडिंग और प्रशासनिक कार्यों तक, AI कई लाभ प्रदान करता है।

**आजीवन सीखना और कौशल उन्नयन**

क्या आजीवन सीखना नया मानदंड बन रहा है? तेजी से हो रहे तकनीकी बदलावों और नौकरी के बाजारों में बदलाव के साथ, निरंतर सीखना और कौशल में वृद्धि आवश्यक है। शैक्षणिक संस्थान व्यक्तियों को प्रतिस्पर्धी बने रहने में मदद करने के लिए आजीवन सीखने के कार्यक्रमों पर तेजी से ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।

**2. अवसर और नवाचार :**

वे क्षेत्र जो नवीनतम चुनौतियो एवं जिज्ञासाओं को ध्यान में रखते हुए तात्कालिक रूप से विकसित किए जाते हैं अवसर एवं नवाचार के रूप में जाने जाते हैं

**आभासी और संवर्धित वास्तविकता (वीआर/एआर)**

VR और AR सीखने के अनुभवों को कैसे बेहतर बना सकते हैं? आभासी और संवर्धित वास्तविकता प्रौद्योगिकियां सीखने के ऐसे अनुभव प्रदान करती हैं जो शिक्षा को अधिक आकर्षक और प्रभावी बना सकते हैं।

**सीखने का गेमीकरण**

क्या सीखना एक ही समय में मज़ेदार और प्रभावी हो सकता है? गेमिफिकेशन में शैक्षिक गतिविधियों में खेल तत्वों को शामिल करना शामिल है ताकि जुड़ाव और प्रेरणा बढ़ाई जा सके।

**3. लाभ और चुनौतियाँ—सुगम्यता :** डिजिटल शिक्षा भौगोलिक बाधाओं को कम करती है, जिससे शिक्षा अधिक छात्रों के लिए सुलभ हो जाती है। **निजीकरण-** एआई और अनुकूली शिक्षण प्रौद्योगिकियां शिक्षा को व्यक्तिगत छात्र की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाती हैं, जिससे सीखने के परिणामों में सुधार होता है। **जुड़ाव-** गेमिफिकेशन और वीआर/एआर जैसी इमर्सिव प्रौद्योगिकियां सीखने को अधिक इंटरैक्टिव और आनंददायक बनाती हैं। **कैरियर की तैयारी-** आजीवन सीखने और कौशल उन्नयन कार्यक्रम व्यक्तियों को प्रासंगिक बने रहने और अपने करियर में आगे बढ़ने में मदद करते हैं।

हालाँकि, ये प्रगति , चुनौतियाँ भी लेकर आती हैं जैसे-**डिजिटल विभाजन**-यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि सभी छात्रों की प्रौद्योगिकी और इंटरनेट तक पहुंच हो, ताकि शिक्षा के बीच अंतर को बढ़ने से रोका जा सके। **गोपनीयता संबंधी चिंताएं-** डिजिटल उपकरणों और एआई के बढ़ते उपयोग के साथ, छात्र डेटा गोपनीयता की सुरक्षा सर्वोपरि है। **शिक्षक प्रशिक्षण -** शिक्षकों को अपनी शिक्षण विधियों में नई प्रौद्योगिकियों को प्रभावी ढंग से एकीकृत करने के लिए निरंतर व्यावसायिक विकास की आवश्यकता होती है। **संसाधन आवंटन-** वीआर/एआर जैसी उन्नत प्रौद्योगिकियों को लागू करना महंगा हो सकता है, और इन संसाधनों तक समान पहुंच सुनिश्चित करना आवश्यक है। **पाठ्यक्रम में संतुलन:** कला और मानविकी की कीमत पर STEM पर अत्यधिक जोर देने के बारे में बहस चल रही है, जिसके परिणामस्वरूप STEAM (STEM + कला) को एकीकृत करने के बारे में चर्चा हो रही है।

**4. संभावित चुनौतियाँ और बहस :** समानता और पहुंच- हम शिक्षा तक समान पहुँच कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं? डिजिटल डिवाइड को संबोधित करना महत्वपूर्ण है क्योंकि शिक्षा तेजी से डिजिटल होती जा रही है। यह सुनिश्चित करना कि सभी छात्रों के पास आवश्यक तकनीक और इंटरनेट कनेक्टिविटी तक पहुँच हो, एक महत्वपूर्ण चुनौती है। शिक्षक प्रशिक्षण और सहायता -क्या शिक्षक शिक्षा के भविष्य के लिए तैयार हैं? जैसे-जैसे नई तकनीकें और पद्धतियाँ सामने आ रही हैं, शिक्षकों के लिए निरंतर व्यावसायिक विकास आवश्यक है। शिक्षकों को नए उपकरणों और दृष्टिकोणों के अनुकूल होने के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण और सहायता प्रदान करना एक महत्वपूर्ण विचार है। डेटा गोपनीयता और सुरक्षा--हम छात्रों के डेटा की सुरक्षा कैसे करते हैं? डिजिटल लर्निंग टूल्स और एआई के उदय के साथ, छात्रों के डेटा की गोपनीयता की सुरक्षा और सुरक्षित डेटा प्रथाओं को सुनिश्चित करना सर्वोपरि है।

**5. निष्कर्ष :**

शिक्षा का भविष्य संभावनाओं से भरा हुआ है। AI-संचालित व्यक्तिगत शिक्षा से लेकर इमर्सिव Virtual Reality अनुभवों तक, अगला दशक शैक्षणिक परिदृश्य को बदलने का वादा करता है। हालाँकि, यह समानता सुनिश्चित करने,

शिक्षकों का समर्थन करने और डेटा गोपनीयता की रक्षा करने जैसी चुनौतियाँ भी लेकर आता है। इन चुनौतियों का समाधान करके और नवीन रुझानों को अपनाकर, हम सभी के लिए अधिक समावेशी, प्रभावी और आकर्षक शैक्षिक अनुभव बना सकते हैं। हम सभी जानते हैं कि

**1.** छात्र-केंद्रित परिणामः मूल्यांकन स्नातक स्तर के छात्रों के शैक्षिक अनुभव को सीधे प्रभावित करता है, यह सुनिश्चित करता है कि उनकी सीखने की यात्रा उनके चुने हुए क्षेत्रों की व्यावहारिक मांगों के अनुरूप हो।

**2.** पाठ्यक्रम नवाचार के निष्कर्ष शिक्षा की गुणवत्ता और प्रासंगिकता को बढ़ाने के उद्देश्य से पाठ्यक्रम नवाचार के लिए सिफारिशों को सूचित करेंगे।

**3**. स्थानीय जरूरतों के साथ संरेखणः • स्थानीय उद्योगों और सामाजिक जरूरतों के लिए पाठ्यक्रम की प्रासंगिकता को समझकर, मूल्यांकन उन शैक्षिक प्रथाओं में योगदान देता है जो बलरामपुर के अद्वितीय संदर्भ के अनुरूप हैं।

**4** व्यापक पाठ्यक्रम रिपोर्टः पाठ्यक्रम मूल्यांकन के निष्कर्षों को रेखांकित करने वाली एक विस्तृत रिपोर्ट, जिसमें ताकत, कमजोरियां और सुधार के क्षेत्र शामिल हैं।

**5.** संवर्द्धन के लिए अनुशंसाएं मूल्यांकन के चिन्हित आयामों द्वारा सूचित स्नातक स्तर के पाठ्यक्रम की प्रासंगिकता बढ़ाने के लिए कार्रवाई योग्य अनुशंसाएं।

क्या हम शिक्षा के भविष्य में निवेश करने के लिए तैयार हैं? हम यह सुनिश्चित करने के लिए क्या कदम उठा सकते हैं कि इन प्रगतियों का लाभ सभी छात्रों को मिले? बातचीत में शामिल हों और शैक्षिक परिदृश्य को आकार देने के लिए इन रुझानों की क्षमता का पता लगाएं।
शिक्षा के भविष्य के लिए तैयार रहें और समय से आगे बढ़ें।

- **भविष्योन्मुखी शिक्षा के कुछ उदाहरण :-**
    1. आभासी वास्तविकता (Virtual Reality) --छात्रों को वर्चुअल वातावरण में प्रयोग करने का मौका मिलता है A
    2. संवर्धित वास्तविकता (Artificial Reality) --छात्रों को अपने आस-पास के परिवेश में डिजिटल जानकारी दिखती है A
    3. गेम-आधारित शिक्षण --छात्रों को सीखने का मज़ेदार अनुभव मिलता है A
    4. एआई-संचालित अनुकूली शिक्षण --छात्रों की ज़रूरतों के मुताबिक सामग्री और अनुभव तैयार किए जाते हैं A
    5. स्मार्ट वियरेबल डिवाइस --छात्रों के प्रदर्शन के बारे में जानकारी मिलती है A
    6. वैश्विक शिक्षण नेटवर्क --छात्रों, शिक्षकों, और विशेषज्ञों के बीच सहयोग बढ़ता है A

- **भविष्योन्मुखी शिक्षा से जुड़े कुछ और विचार :-**
    1. छात्रों को अपनी सीखने की प्रक्रिया में स्वयं निर्देशित होने के अवसर देने चाहिए A
    2. शिक्षकों की भूमिका ज़्यादा मार्गदर्शक होनी चाहिएA
    3. शिक्षा प्रदाताओं को छात्रों के बीच बातचीत और सहयोग को बढ़ावा देना चाहिए A

**सामाजिक और पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान के परिदृश्य में भविष्यवादी शिक्षा की प्रासंगिकता**

सामाजिक और पर्यावरणीय उत्तरदायित्वः जैसे-जैसे जलवायु परिवर्तन, सामाजिक असमानता और पर्यावरणीय क्षरण जैसी वैश्विक चुनौतियां अधिक स्पष्ट होती जा रही हैं, कार्यबल के लिए स्थायी समाधानों में योगदान करने की उम्मीद बढ़ रही है। अध्ययन वास्तविक दुनिया की चुनौतियों का सामना करने के लिए स्नातकों को तैयार करते हुए शैक्षिक पेशकशों में सामाजिक और पर्यावरणीय जिम्मेदारी को एकीकृत करने की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए पाठ्यक्रम के मूल्यांकन को उचित ठहराता है। आर्थिक प्रभावः एक ऐसा पाठ्यक्रम जो वर्तमान और भविष्य के कार्यबल की जरूरतों को पूरा करने में पीछे रहता है, व्यक्तियों और समुदाय के लिए गहरा आर्थिक प्रभाव डाल सकता है। स्नातक स्वयं को लाभकारी रोजगार प्राप्त करने के लिए कम सुसज्जित पा सकते हैं, जिससे बेरोजगारी और अल्प-रोजगार दर में योगदान हो सकता है। पाठ्यक्रम की प्रासंगिकता को संबोधित करके, अध्ययन का उद्देश्य आवश्यक समायोजनों को सूचित करना है जो स्नातक स्तर के छात्रों की रोजगार क्षमता और आर्थिक संभावनाओं को बढ़ाएंगे। नैतिक निर्णय लेना और सामाजिक प्रभावः तकनीकी कौशल से परे, पाठ्यक्रम को नैतिक निर्णय लेने और पेशेवर विकल्पों के सामाजिक प्रभाव की समझ का पोषण करना चाहिए। अध्ययन इस बात पर जोर देता है कि भविष्य के कार्यबल की जरूरतों के साथ संरेखित एक पाठ्यक्रम को जिम्मेदारी की भावना और निर्णय लेने के नैतिक आयामों के बारे में जागरूकता पैदा करनी चाहिए।

**जॉब मार्केट डायनेमिक्स का विकास**

तकनीकी प्रगतिः प्रौद्योगिकीय प्रगति की तीव्र गति उद्योगों और नौकरी की आवश्यकताओं को नया रूप दे रही है। स्वचालन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डिजिटलीकरण विभिन्न क्षेत्रों के अभिन्न अंग बन रहे हैं, जिसके लिए उन्नत तकनीकी कौशल से लैस कार्यबल की आवश्यकता है। पारंपरिक पाठ्यक्रम इन उभरती जरूरतों को पर्याप्त रूप से पूरा नहीं कर सकता है, जिससे बलरामपुर में वर्तमान शैक्षिक पेशकशों की एक महत्वपूर्ण परीक्षा होती है। नौकरी विशेषज्ञता और अंतःविषय कौशलः नौकरी बाजार तेजी से विशेष कौशल की मांग करता है, लेकिन अंतःविषय ज्ञान को भी महत्व देता है। जबकि विशेषज्ञता आवश्यक है, सभी विषयों में सहयोग करने की क्षमता समान रूप से महत्वपूर्ण है। अध्ययन एक ऐसे पाठ्यक्रम की आवश्यकता को पहचानता है जो संतुलन बनाता है, अनुकूलनशीलता और सहयोग को बढ़ावा देते हुए विशिष्ट क्षेत्रों में विशेषज्ञता को बढ़ावा देता है।

**वैश्वीकरण और बाजार प्रतिस्पर्धा**

वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकताः वैश्वीकरण ने अर्थव्यवस्थाओं को आपस में जोड़ा है और प्रतिस्पर्धा को बढ़ाया है। बलरामपुर जिले को, इस वैश्वीकृत संदर्भ में फलने-फूलने के लिए, एक ऐसे कार्यबल की आवश्यकता है जिसके पास कौशल और ज्ञान हो जो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा कर सके। अध्ययन एक ऐसे पाठ्यक्रम की आवश्यकता पर जोर देता है जो वैश्विक दृष्टिकोण, पार-सांस्कृतिक संचार कौशल और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार गतिशीलता की समझ पैदा करता है। उद्यमशीलता और अभिनव सोचः भविष्य के कार्यबल को न केवल नौकरी चाहने वाले होना चाहिए बल्कि नौकरी निर्माता भी होना चाहिए। एक प्रतिस्पर्धी वैश्विक बाजार में उद्यमशीलता और नवीन सोच को तेजी से महत्व दिया जा रहा है। यह अध्ययन स्नातक स्तर के छात्रों के बीच रचनात्मकता, समस्या-समाधान कौशल और उद्यमशीलता की मानसिकता को बढ़ावा देने के महत्व पर जोर देकर पाठ्यक्रम की परीक्षा को उचित ठहराता है।

**करियर की बदलती प्रवृतियों को अपनाना**

कैरियर लचीलापन और आजीवन सीखनाः एक रैखिक कैरियर पथ का पारंपरिक मॉडल विकसित हो रहा है। स्नातकों से उम्मीद की जाती है कि वे विभिन्न कैरियर प्रक्षेपवक्रों को नेविगेट करेंगे, जिसके लिए अनुकूलनशीलता और निरंतर सीखने की आवश्यकता होती है। यह अध्ययन स्नातक स्तर के छात्रों को ऐसे कौशल से लैस करने के महत्व पर जोर देकर पाठ्यक्रम की जांच को उचित ठहराता है जो कैरियर के लचीलेपन और आजीवन सीखने की मानसिकता को सुविधाजनक बनाते हैं। डिजिटल साक्षरता अब एक वैकल्पिक कौशल नहीं है; यह एक मौलिक आवश्यकता है। अध्ययन एक ऐसे पाठ्यक्रम की आवश्यकता को पहचानता है जो न केवल तकनीकी कौशल प्रदान करता है बल्कि सीखने की चपलता को भी बढ़ावा देता है-नई तकनीकों और कार्यप्रणाली के लिए जल्दी से अनुकूलन करने की क्षमता।

**स्थानीय प्रासंगिकता और उद्योग संरेखण**

स्थानीय आर्थिक आवश्यकताएँ वैश्विक रुझानों पर विचार करते हुए, अध्ययन स्थानीय आर्थिक जरूरतों के साथ पाठ्यक्रम को संरेखित करने के महत्व को स्वीकार करता है। अध्ययन एक ऐसे पाठ्यक्रम की आवश्यकता पर जोर देकर पाठ्यक्रम की परीक्षा को उचित ठहराता है जो विश्व स्तर पर प्रासंगिक और स्थानीय रूप से उत्तरदायी हो।उद्योग सहयोग और इंटर्नशिपः प्रभावी पाठ्यक्रम प्रासंगिकता में उद्योगों के साथ सहयोग और वास्तविक दुनिया के अनुभवों को शामिल करना शामिल है। इंटर्नशिप, उद्योग सहयोग और व्यावहारिक अनुभव महत्वपूर्ण घटक हैं जिन्हें अध्ययन सैद्धांतिक ज्ञान और व्यावहारिक अनुप्रयोग के बीच की खाई को पाटने के लिए आवश्यक मानता है।

**पाठ्यक्रम प्रासंगिकता का निष्कर्षः**

अंत में, अध्ययन एक विकसित नौकरी बाजार द्वारा उत्पन्न बहुआयामी चुनौतियों को पहचानकर भविष्य के कार्यबल की जरूरतों के लिए पाठ्यक्रम की प्रासंगिकता पर अपना ध्यान केंद्रित करता है। पाठ्यक्रम को न केवल तकनीकी कौशल के साथ स्नातकों को तैयार करना चाहिए, बल्कि वैश्विक और स्थानीय चुनौतियों के लिए अनुकूलन, नवाचार और जिम्मेदारी से योगदान करने की क्षमता के साथ भी तैयार करना चाहिए। इस परीक्षा के माध्यम से, अध्ययन का उद्देश्य अंतर्दृष्टि प्रदान करना है जो पाठ्यक्रम में वृद्धि का मार्गदर्शन करेगा और यह सुनिश्चित करेगा कि बलरामपुर में स्नातक स्तर की शिक्षा भविष्य के कार्यबल की मांगों के प्रति उत्तरदायी हो।

**भविष्यवादी शिक्षा के संदर्भ में सुझाव**

शिक्षा में प्रौद्योगिकी का समावेश एक परिवर्तनकारी चरण का प्रतीक है जो पारंपरिक शिक्षण विधियों के पुनर्मूल्यांकन की मांग करता है। एंडरसन और डेक्सटर (2005) का मानना है कि डिजिटल युग में शैक्षिक परिदृश्य में एक मौलिक बदलाव की आवश्यकता है, जिससे सीखने के अनुभव में प्रौद्योगिकी के निर्बाध एकीकरण की आवश्यकता है। जहां तकनीकी संसाधन भिन्न हो सकते हैं, यह समझना कि उपलब्ध प्रौद्योगिकियों का उपयोग कैसे किया जाए और स्नातक स्तर के छात्रों के लिए डिजिटल साक्षरता कौशल विकसित करना महत्वपूर्ण हो जाता है। मिश्रा और कोहलर (2006) की तकनीकी शैक्षणिक सामग्री ज्ञान (टी. पी. ए. सी. के.) की अवधारणा शिक्षकों के लिए एक सूक्ष्म ढांचा प्रदान करती है। यह मानता है कि केवल प्रौद्योगिकी को पेश करना पर्याप्त नहीं है; इसे उद्देश्यपूर्ण रूप से पाठ्यक्रम में एकीकृत किया जाना चाहिए। बलरामपुर के शैक्षणिक संस्थान टी. पी. ए. सी. के. दृष्टिकोण को अपनाने से लाभान्वित हो सकते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि प्रौद्योगिकी का उपयोग पढ़ाई जा रही सामग्री और नियोजित शैक्षणिक तरीकों के साथ संरेखित हो।

## स्थानीय जरूरतों के लिए शिक्षा को अनुकूलित करना

वैश्विक रुझानों को अपनाते हुए, बलरामपुर जिले के अनूठे सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक संदर्भ को संबोधित करने के लिए भविष्य की शिक्षा के आयामों को अनुकूलित किया जाना चाहिए। स्थानीय बारीकियों, भाषाओं और परंपराओं को शैक्षिक ताने-बाने में बुना जाना चाहिए। प्रेन्स्की (2001) छात्रों को "डिजिटल मूल निवासी" के रूप में स्वीकार करने के महत्व को स्वीकार करता है, लेकिन यह उनकी सांस्कृतिक जड़ों की समझ के साथ पूरक होना चाहिए। किसी भी स्तर की शिक्षा शिक्षा के वैश्विक मॉडल की नकल नहीं होनी चाहिए, बल्कि एक विचारशील अनुकूलन होना चाहिए जो समुदाय के मूल्यों का सम्मान करता है। इस संदर्भ में भविष्य की शिक्षा के आयामों में स्थानीय ज्ञान को पहचानना और महत्व देना, स्वदेशी प्रथाओं को शामिल करना और शिक्षा को परंपरा और आधुनिकता के बीच एक सेतु बनाना शामिल है।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-**

**1**. ओड़, एल.के (2017): शैक्षिक प्रशासन, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, प्रीमियर प्रन्टिंग प्रेस, जयपुर

**2.** अग्रवाल, पवन (2019): श्रम बाजार के अनुरूप उच्च शिक्षा, योजना, अंक: 09 सितम्बर, 2019 पृष्ठ सं. 11-13

**3.** चन्सौरिया, मुकेश (2019): भारत में उच्च शिक्षा: समस्याएं एवं समाधान, योजना, अंक: 09, सितम्बर, 2009 पृष्ठ सं. 27-30

**4.** पाण्डेय, हरेश (2017): भारत में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में स्ववित्त पोषित पाठ्यक्रम का विकास, परिप्रेक्ष्य, शैक्षिक योजना एवं प्रशासन, वर्ष 14 अंक-1, अप्रैल 2017, राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान, 17 श्री अरविदों मार्ग, नई दिल्ली

**5.** फांसिस, सौदंराराज, (2001): रोल ऑफ प्राइवेट सेक्टर इन हायर एजुकेशन इन इण्डिया, यूनिवर्सिटी न्यूज, 39(29), ए0आई0यू0 नई दिल्ली

**6.** भटनागर, आर0 पी0 एवं विद्या अग्रवाल, (2017): शैक्षिक प्रशासन, इण्टरनेशनल पब्लिकेशन हाउस, लायल बुक डिपो, मेरठ

**7.** रहमान, सफी, (2018) राष्ट्रीय ज्ञान आयोग, इंडिया टुडे 25 जून 2022, पृ0 20-21

**8.** सिंह, एल0सी0, (2023): सेल्फ फाइनेसिंग हायर एजुकेशन, यूनिवर्सिटी न्यूज 40,(40), ए0आई0यू0, नई दिल्ली

**9.** सारस्वत, मालती एवं बाजपेयी.बी.एल (2022): भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्यायें, आलोक प्रकाशन, लखनऊ

**10**. Final draft of National Education Policy 2020.

**11**. Puri, Natsaha (30 August 2019). A Review of the National Education Policy of the Government of India - The Need for Data and Dynamism in the 21st Century. SSRN.

**12**. Vedhathiri, Thanikachalam (January 2020), "Critical Sasessment of Draft Indian National Education Policy 2019 with Respect to National Institutes of Technical Teachers Training and Research", Journal of Engineering Education, 33

**13.** Kumar, K. (2005). Quality of Education at the Beginning of the 21st Century: Lessons from India. Indian Educational Review 2. Draft National Education Policy 2019,

**ऑनलाइन शिक्षण सामग्री**

**1** https://translate.google.com/translate?u=https://science-education-research.com/teaching-science/constructivist-pedagogy/predict-observe-explain/&hl=hi&sl=en&tl=hi&client=sge&prev=search

**2** https://translate.google.com/translate?u=https://www.twinkl.co.uk/teaching-wiki/prediction&hl=hi&sl=en&tl=hi&client=sge&prev=search

**3** https://www.mhrd.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/nep/NEP_Final_English.pdf referred on 10/08/2020

4 https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf

5 **.** https://innovate.mygov.in/wpcontent/uploads/2019/06/mygov15596510111.pdf

6 **.** http://s3-ap-southesat-1.amazonaws.com/ijmer/pdf/volume10/volume10-issue2(5)/33.pdf

7 https://mgmu.ac.in/wp-content/uploads/NEP-Indisa-New-Education-Policy_2020-final.pdf

8 https://en.wikipedia.org/wiki/National_Education_Policy_2020